Kama.

14-5-67 ओम शान्ति रात्री क्लास

अक्सर करके बच्चे भाषण करने जाते है किसी नाँ किसी टापिक पर। आज कल तो खास विश्व मे शान्ति
कैसे स्थापित हो उस पर चलता है। अब दुनिया तो जानती नही है कि विश्व पर शान्ति भगवान बाप
ही स्थापन कर रहे है। उनको जानते ही नही। संन्यासी भिस्तर ठिक्कर मे कह देते है। समझते यही है कि
दुनियाँ मे अशान्ति है। अब विश्व मे शान्ति कैसे हो? इसलिये पीस प्राइज भी बहुतो को मिलता है।
तुम बच्चो को भाषण मे यह समझाना है कि विश्व पर शान्ति कैसे हो। उनकी बुधी मे है कि यह जो
इतने धर्म है वो सब आपस मे मिल कर एक हो जावे। अब सभी धर्म मिल कर एक तो कब होते नही है।
हाँ यह हो सकता है कि एक धर्म ही हो। इन बातो को तुम बच्चे ही समझते हो। तुम्हारे मे भी कोई-2
भाषण लायक है। बोलो सभी यही चाहते है कि विश्व मे शान्ति कैसे हो?? क्योकि अशान्ति मे दुःख
शान्ति मे सुख होता है। मनुष्य चाहते है कि सुख शान्ति हो। एक है शान्ति धाम दुसरा फिर है सुख धाम
और दुःख धाम। हम जो ब्र,कु,कु है वो है ही प्रजापिता ब्रह्मा की सन्तान। ब्रह्मा वल्द शिव बाबा।
ब्रह्मा शिव बाबा का बच्चा है। ऊँच ते ऊँच शिव बाबा की महिमा करनी है। सभी आत्माओं का वो
बाप है। सब आत्माये ब्रदर्स है। आत्माओ के रहने का स्थान है ही शान्ति धाम। यहां शरीर धारन कर
पार्ट बजाते है। आत्मा अलग हो जावे तो पार्ट नही बज सकेगा। घर है ही शान्ति धाम। अब एक तो
शान्ति धाम वो है। यहां है अशान्ति। करोडो मनुष्य है। लडाई झगडा बहुत है। दुसरी शान्ति होती है स्वर्ग
मे जब कि धर्म ही एक रहता है। भारत मे सुख धाम था आत्माये सब शान्ति धाम मे रहती थी।
जब देवताओं का राज्य था तो सुख था। शान्ति सुख सम्पति थी। 5000 वर्ष की बात है जब कि
भारत हेवन था। लक्ष्मी-नारायण का एक राज्य था। दुसरा कोई राज्य नही था। याद करो कि कौनसा ऐसा था
ना। पहले-2 पुछना चाहिये कि कौनसा एक धर्म था ना। पवित्रता भी थी सुख शान्ति थी। अथाह धन
था। फिर जब भक्ति मार्ग शुरू हुआ है तो मन्दिर बनाया है सोमनाथ का। भारत कितना शाहुकार था।
सोने के महल थे। और तो कोई धर्म था ही नही। तुम्हारे दिल मे जो है वो और कोई के दिल मे नही
है। पीस प्रासपर्टी प्योरटी थी। मनुष्य भी थोडे से थे। अथाह सम्पति थी। और वो है शान्ति धाम
जहाँ से ही हम आत्माये आती है। शान्ति धाम फिर सुख धाम। अब है कलियुग दुःख धाम।
अनेक धर्म हो गये है। सतयुग के बाद है त्रेता। वहां पर राम राज्य था। द्वापुर मे फिर देवताये वाम
मार्ग मे जाते है। ~~वर्ष-सब-सब-फिर~~ और धर्म आते है। सतयुग मे पवित्रता सुख शान्ति सम्पति
सब कुछ था। सुख धाम था ना। फिर दुःख धाम हुआ। फिर भी सुख धाम जरूर आना चाहिये। पहले
शान्ति धाम जाना पडे। पतित आत्माये तो जा नही सकती। गाते भी है कि हे पतित पावन आओ।
बाप कहते है कि तुम पावन थे। फिर तुम पतित बने हो। आत्मा मे खाद पड़ी है। आत्मा जो ही सच्चा
सोना थी वो ही अब इम्प्योर बन गई है। फिर प्योर कैसे बने। गंगा स्नान से तो नही बनेगी।
ऐवर प्योर जो पतित पावन बाप है उनको ही आना पड़ता है। बाप कहते है कि मामेकम् याद करो
तो तुम सतोप्रधान बन जावेंगे। फिर तुम आकर स्वर्ग का राज्य करेंगे। भारत मे जब स्वर्ग था तो थोड़े
मनुष्य थे। अब है 500 करोड़। इस समय अशान्ति दुःख भी है। इनको स्वर्ग का मालिक किसने बनाया?
शिव तो बेहद का बाप है। सर्व का सद्गति दाता है। गाइड बन कर सबको ले जाते है। सबका हिसाब किताब
चुक्तु होता है। यह है ही पुरुषोतम संगम युग। भारत जो सिरताज था अब सबसे नीच बन गया है।
फिर बाप ऊँच बनाने आये है। यह महाभारत लडाई पहले भी लगी थी। उससे ही स्वर्ग के गेट खुले
थे। ब्रह्मा द्वारा बाप बता रहे है। कहते है मामेकम् याद करो। तो तुम्हारी आत्मा प्योर बन कर
उड़ने लग पड़ेगी। पतित आत्मा कोई वापस जा नही सकती है। बाप ही आकर सबको वापस ले
जाते है। सतयुग मे थोडे होते है। सतयुग मे थोडे होते है। यहाँ पर बहुत है। तो जरूर विनाश होगा

शान्ति का सागर वाप ही है। वो ही शिव वावा हमको पढा रहे है। वो हम आत्माओं का वाप है। फिर ब्रहमा कुमार कुमारियाँ तो हम पौत्रे ठहरे। ब्रहमा दवारा हमको समझाते है कि शान्ति और सुख मै ही स्थापना करता हूँ। अभी तो भारतवासी भी दुःखी है। धर्म भ्रष्ट कर्म भ्रष्ट भी है। वो ही पवित्र प्रवृती मार्ग अपवित्र वन गया है। फिर वाप धर्म श्रेष्ट कर्म श्रेष्ट वना रहे है। शान्ति का सागर सुख का सागर वो है। सवका पार्ट अपना-2 है। यहाँ भी हर एक का मतवा अपना-2 है। अभी एक धर्म की स्थापना हो रही है। अनेक धर्मों के विनाश के लिये यह महाभारत लडाई जरूर लगनी है। हम रचता और रचना को जान गये है। पहले-2 महिमा वाप की करनी चाहिये। 5000 वर्ष पहले विश्व मे शान्ति थी। हम श्रीमत पर भारत की तनमन धन से सेवा कर रहे है। सच्ची-2 पीस प्रासपेरटी हमको मिलती है। प्योअरटी है तो पीस प्रासपेरटी भी है। यह स्थपना करना वाप ही का काम है पतित मनुष्य कर नही सकता। फालुत माथा मारते-2 सीढी उतरते ही जाते है। तो ऐसे-2 विचार सागर मथन कर फिर भाषाण करना चाहिये। विश्व मे शान्ति वाप ही स्थापन करते है। सीढी भी ले जानी चाहिये। त्रिमूर्ती झाड़ भी। नही तो अकेली भाषण करना चाहिये। मूलवात है ही मनमनाभव्। कृष्ण को भगवान कहना रांग है। भगवान परमपिता परमात्मा को है कहा जाता है। उसने ब्रहमा दवारा यह ज्ञान यज्ञ रचा है। हम राज योगी है। वो है हठयोगी। सवका सदगति दाता एक ही वाप है। वाप कहते है कि मै सव साधुओं का भी उदार करता हूँ। 20 मिन्ट मे वहुत ही भाषण कर सकते है। पहले-2 परिचय वाप का देना है। विश्व मे शान्ति थी नाँ। भारत स्वर्ग था पवित्रता सुख शान्ति सव था। अव नर्क है। इसको वैशाल्य नर्क कहा जाता है। भारत ही शिवाल्य था। शिव ने स्थापन किया था। अव वैशाल्य है। शिवाल्य शिव स्थापन करते है। वैशाल्य रावण स्थापन करते है। जिस रावण को तुम जलाते हो। हम है संगम युगी तुम हो कलियुगी हम जानते है कि अव यह सारा खलास होना है। हम राज योग सीख रहे है। विश्व मे शान्ति थी नाँ। 5000 वर्ष की वात है। ज्ञान सागर वाप ही ज्ञान सुनाते है। वाकी सव है भक्ति की आथारटी। ज्ञान की आथारटी वाप ही है। ज्ञान सु है सुख। भक्ति से है दुःख ऐसे-2 समझाना चाहिये। मन्दिर वनाने वाले शिव की पुजा करने वाले सव भक्त है नाँ। पुजारी को कव पुज्य कह नही सकते। पुज्य शंकराचार्य कहेंगे क्या? पुज्य नही है तो फिर उनको माथा क्यो टेकते हो तुम छोटी-2 वच्चियाँ शंकराचार्य के पास जा सकती हो। देवो कल सुनाया नाँ कि पुरी वाले शंकराचार्य ने कहा कि हिन्दुओं को भी 4-5 शादी करनी चाहिये। वहुत वच्चे पैदा करने चाहिये। अव यह न्यूजपेपर नही है। नानसैंस लिखी हुई है। द्रौपदी को पाँच पति दिखाते है तो अव पतियों को पाँच पत्नियाँ होनी चाहिये। तुमको रोकना चाहिये इस शंकराचार्य ने वहुत खूव हडताल आद की है। तो दिमाग खराव हो गया है क्या? तुम वच्चो को वहुत नशा होना चाहिये। शंकराचार्य लिखते है कि वच्चे वहुत पैदा होने चाहिये। पहले-2 तो खुद शादी करे। वाप कहते है कि शास्त्र आद जो भी पढ़े है वो सव विसरो। तुमसे कोई पुछे कि तुम शास्त्रो को नही मानते हो? वोलो मानेंगे क्यो नही। यह भक्ति मार्ग के शास्त्र है। भक्त तो सव है। भक्ति का मार्ग ही अलग है। ज्ञान मार्ग ही अलग है। भक्ति से दुर्गति ज्ञान से सदगति होती है। अव हमारी सदगति करने वाला वाप आया हुआ है। इसलिये ही हम भक्ति अवनहीं करते है। ज्ञान मिला तो भी फिर भक्ति क्यों करेंगे। भक्ति का फल भगवान देते है नाँ। तुम गाते भी हो कि ज्ञान भक्ति और वैराग। किसका वैराग? भक्ति का वैराग। वाप नई दुनियाँ मे ले जाते है। जहाँ पर भक्ति होती ही नही है। हमको ज्ञान सनाने वाला वाप है। लिखा हुआ भी है ज्ञान सागर पतित पावन गीता ज्ञान दाता, शिवउपरमात्मा वाहुवे। वो फिर कह देते शिव परमात्मा वो श्रीकृष्ण एक ही है। औ सवको पोजिशान अलग-2 है। कह देते है कि सव ईश्वर के रूप है। परमात्मा खद ही विकार करते है वहलते है। ऐसे वाते जहाँ सनते है उनको कह देते है सत्संग। वाप कहते है सत्संग एक ही है। वाकी सव है लत संग। पतित दुनियाँ मे एक भी पावन नही है पवन दुनियाँ मे एक भी पतित हो नही सकता। वाकी सव है भक्ति मार्गी जप तो भ्रष्टाचार मे ही लेंगे नाँ। देवताओं के लिये ऐसे नही कहेंगे। गुडनाइट